SHRI CHITTA RANJAN DEBBARMA

Shri Chitta Ranjan Debbarma, is presently the Peethadhish of Shantikali Peeth and Ashram, in Gomati district of Tripura.

2. Born on 22 January, 1962, in Barakathal, Sidhai Mohanpur, Shri Debbarma was raised in Tripura. He developed a deep devotion to Shiv Parvati and Radha Krishna from an early age. After completing matriculation, he became a Panchayat Secretary and encountered the teachings of Sri Sri Santikali Maharaj during his travels. He got inspired and embraced sanyas dedicating himself to Maa Tripurasundari under his Guru's guidance. The passing away of his Guru Sri Sri Santikali Maharaj at the hands of the NLFT terrorist organization marked a turning point for him. Entrusted by his Guru to lead Sri Sri Santikali Ashram, he expanded the mission to serve the indigenous poor population. Despite facing threats, he opened hostels in Amarpur, Barakathal, Chachu, Kowaiphang and Burakha, providing shelter and education to over 700 children from economically disadvantaged families.

3. Shri Debbarma extended his Guru's legacy by founding the Sri Sri Santikali English Medium School in 2019, prioritizing holistic and value-based education. With 24 ashrams, an old-age home, and mentorship programs across Tripura, his social impact has grown significantly. His tireless efforts in education and his profound influence on spiritual and moral well-being, particularly in indigenous areas, have sparked a resurgence. His influence spans both indigenous and non-indigenous communities, fostering a growing number of followers actively engaged in Dharma Jagaran. Aligned with his revered Guru's teachings, he rejects confinement to a single ashram, emphasizing the splendor of culture, Sanatan Dharma practices, and the rich history of the region. His steadfast belief underscores the paramount importance of continually showcasing the cultural heritage and principles of Sanatan Dharma to establish and perpetuate Sanatanatwa among the people.

4. Shri Debbarma's commitment to education and spiritual guidance has resonated, attracting followers from both indigenous and non- indigenous communities. Believing in the constant reminder of the region's cultural heritage, he established and nurtured a dynamic presence in various ashrams. Apart from providing educational and spiritual support, the ashram ventured into healthcare, employing traditional methods and herbs to offer guaranteed treatments for various ailments. Numerous individuals, once deemed incurable by conventional medicine, found solace and healing through the ashram's holistic healthcare practices. His life story is a testament to his unwavering dedication to education, spiritually, and the well-being of the community, embodying the principles instilled by his revered Guru.

5. Shri Debbarma has been conferred with several awards like Sant Eshwar Award by Sant Eshwar Foundation in 2018; Krishna Chandra Gandhi Award by Purvottar Janajati Shiksha Samiti in 2020; Karmayogi Award by My Home India in 2021 and Maharaja Bir Bikram Manikya Smriti Award by the Government of Tripura in 2022.

श्री चित्त रन्जन देब्बर्मा

श्री चित्त रन्जन देब्बर्मा, वर्तमान में त्रिपुरा के गोमती जिले में शांतिकाली पीठ और आश्रम के पीठाधीश हैं।

2. 22 जनवरी, 1962 को बराकथल, सिधाई मोहनपुर में जन्मे, श्री चित्त रन्जन देब्बर्मा का लालन–पालन त्रिपुरा में हुआ। उनके मन में अल्पायु से ही शिव–पार्वती और राधा–कृष्ण के प्रति अगाध भक्ति हो गई थी। मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, श्री देबबर्मा पंचायत सचिव बन गए और अपनी यात्राओं के दौरान उनका परिचय श्री श्री शांतिकाली महाराज की शिक्षाओं से हुआ। उन्होंने अपने गुरु की प्रेरणा और मार्गदर्शन में मां त्रिपुर सुंदरी की शरणागत होकर संन्यास ले लिया। एनएलएफटी आतंकवादी संगठन के हाथों उनके गुरु श्री श्री शांतिकाली महाराज का देहांत उनके लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। अपने गुरु द्वारा श्री श्री शांतिकाली आश्रम का नेतृत्व सौंपे जाने पर, उन्होंने स्थानीय गरीब आबादी की सेवा मिशन का विस्तार किया। धमकियों के बावजूद, उन्होंने अमरपुर, बराकथल, चाचू, कोवाइफांग और बुराखा में छात्रावास खोले, जहाँ आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के 700 से अधिक बच्चों को आवास और शिक्षा प्रदान की।

3. श्री देब्बर्मा ने समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए, 2019 में श्री श्री शांतिकली इंग्लिश मीडियम स्कूल की स्थापना करके अपने गुरु की विरासत को आगे बढ़ाया। पूरे त्रिपुरा में 24 आश्रमों, एक वृद्धाश्रम और परामर्श कार्यक्रमों के द्वारा उनका सामाजिक प्रभाव काफी बढ़ गया है। शिक्षा के क्षेत्र में उनके अथक प्रयासों और विशेषकर स्थानीय क्षेत्रों में आध्यात्मिक और नैतिक कल्याण पर उनके गहरे प्रभाव ने पुनरुत्थान को बढ़ावा दिया है। उनका प्रभाव स्थानीय और गैर–स्थानीय दोनों समुदायों तक फैला हुआ है, जिससे धर्म जागरण में सक्रिय रूप से जुड़े अनुयायियों की संख्या बढ़ी है। अपने पूज्य गुरु की शिक्षाओं के अनुरूप, उन्होंने आश्रम तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक समृद्धि, सनातन धर्म की परंपराओं और क्षेत्र के भरे–पूरे इतिहास पर जोर दिया। उनकी दृढ़ आस्था ने लोगों के बीच सनातनत्व को स्थापित और बनाए रखा है तथा सनातन धर्म की सांस्कृतिक विरासत और सिद्धांतों को सर्वोच्च महत्व पर बल दिया है।

4. शिक्षा और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के प्रति श्री देब्बर्मा की प्रतिबद्धता से प्रभावित होकर स्थानीय और गैर–स्थानीय दोनों समुदायों के अनुयायी आकर्षित हुए हैं। क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत पर निरंतर विश्वास व्यक्त करते हुए, उन्होंने विभिन्न आश्रमों में एक ओजस्वी उपस्थिति स्थापित और प्रोत्साहित की। शैक्षिक और आध्यात्मिक सहायता प्रदान करने के अलावा, आश्रम ने स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में कदम रखा और पारंपरिक तरीकों और जड़ी–बूटियों का प्रयोग करके विभिन्न बीमारियों का सुनिश्चित उपचार किया। जिन रोगियों का कभी पारंपरिक चिकित्सा द्वारा उपचार संभव नहीं माना गया था, उन्हें भी आश्रम की समग्र स्वास्थ्य पद्धतियों से आराम और उपचार मिला। उनकी जीवन गाथा समुदाय की शिक्षा, आध्यात्मिकता और बेहतरी के प्रति उनके अटूट समर्पण का प्रमाण है और उनके पूज्य गुरु द्वारा प्रदत्त सिद्धांतोंकी प्रतीक है।

5. श्री देब्बर्मा को 2018 में संत ईश्वर फाउंडेशन द्वारा संत ईश्वर पुरस्कार; 2020 में पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति द्वारा कृष्ण चंद्र गांधी पुरस्कार; 2021 में माई होम इंडिया द्वारा कर्मयोगी पुरस्कार और 2022 में त्रिपुरा सरकार द्वारा महाराजा बीर बिक्रम माणिक्य स्मृति पुरस्कार जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।